SHEESH NAAG

Shesh Naag

ankita

BlueRose ONE .com DIY
Stories Matter

© ankita 2023

All rights reserved by the author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise, without the prior permission of the author.

Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the author and publisher assume no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of the information contained within.

Title: sheesh naag
Language: Hindi
Character set encoding: UTF-8

First published by

An Imprint of BlueRose Publishers

Head Office: B-6, 2nd Floor,
ABL Workspaces, Block B, Sector 4,
Noida, Uttar Pradesh 201301
M: +91-8882 898 898

BlueRose ONE .com DIY
Stories Matter

शेषनाग की किताब

एक सामान्य कोबरा सांप १०० साल बाद इच्छाधारी नाग नागिन बनता है

जब किसी नागिन के नाग को कुछ हो जाए तो उसे नहीं छोडती जिसने उसके जोड़े को खंडित किया होता है| उसका चारा उस नाग की आंखों में बस जाता है| और उसे नहीं छोडती|

नाग नागिन का जीवन

नाग नागिन का जीवन बहुत कठिन होता है| वे बड़ी कठिन परीक्षा देते हैं| एक इंसानी रूप पाने के लिए| नाग नागिनो में सबसे शक्ति शाली शेष नाग और शेषनागिन होती है|

नागिनो में होती सबसे ताकत पर है ये नागिने-

1.नाग रानी

2.महा नाग रानी

3.आदि नागिन

4.शेष नागिन

5.महा शेष नागिन

शेष नागिन और महा शेष नागिन में क्या अंतर है| शेष नागिन वो है जिस का पास सिर्फ शेष नाग की मणि होती है और महा शेष नागिन के पास नौ नाग की नौ मणिया|शेषनाग,वासुकि,तक्षकनाग,कर्कोटक पद्म,महापद्म ,कालिया,कुलिक,शंखनाग की नौ मणिया होती है|

एक शेष नागिन केसे बने और शेष नाग जीवन

एक शेष नागिन बनने के लिए उसे प्रति दिन भगवान विष्णु जी और महादेव जी की भगती करनी पड़ती है और हर वंश की नागिन शेष नागिन नहीं बनती तब जब शेष नागिन के वंश की शेष नागिन ने अपनी शक्तिया त्यागी ना हो जब नागिन 21 वर्ष की होती है तब व शेष नागिन का रूप ले लेती है लाल चंद की पूर्णिमा में चांद की रोशनी में दूध को रखना होता है और जब चांद की रोशनी उस, दूध पर पड़ती है और नागिन दूध पी लेती है तो शेष नागिन का रूप ले लेती है |

शेषनाग या अदिशेष ऋषि कश्यप और कद्रू के सबसे बड़े पुत्र हैं। वह नागराज भी थे। परंतु ये राजपाट छोड़कर विष्णु की सेवा में लग गए क्योंकि उनकी माता कद्रू ने अरुण और गरुड़ की माता तथा अपनी बहिन और उनकी विमाता विनता के साथ छल किया था। वह विष्णु भगवान के परम भक्त हैं और उनको शैया के रूप में आराम देते हैं। वह भगवान विष्णु के साथ क्षीरसागर में ही रहते हैं मान्यताओं के अनुसार शेष ने अपने पाश्चात वासुकी और वासुकी ने अपने पश्चात् तक्षक को नागों का राजा बनाया वह सारे ग्रहों को अपनी कुंडली पर धरे हुए हैं। ऐसा माना जाता है कि जब शेषनाग सीधे चलते हैं कब ब्रह्मांड में समय रहता है और जब शेषनाग कुंडली के आकार में आ जाते हैं तो प्रलय आती है। वह भगवान विष्णु के भक्त होने के साथ-साथ उनके अवतारों में भी उनका सहयोग करते हैं। जैसे कि त्रेता युग के राम अवतार में शेषनाग ने लक्ष्मण भगवान का रूप धरा था। वैसे ही द्वापर युग के कृष्ण अवतार में शेषनाग जी ने बलराम जी का अवतार लिया था। जब वसुदेव जी भगवान को टोकरी में डालकर नंद जी के यहां ले जा रहे थे तब शेषनाग जी उनकी छतरी की तरह उनको बारिश से बचा रहे थे। इनके अन्य छोटे भाई वासुकी , तक्षक , पद्म , महापद्म , कालिया , धनञ्जय , शन्ख आदि नाग थे।

पाताल लोक

नाग जाति के लोगों को वैसे पाताल का वासी माना जाता है। धरती पर ही सात पातालों का वर्णन हमें पुराणों में मिलता है। ये सात पाताल है- अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल। सुतल नामक पाताल में कश्यप की पत्नी कद्रू से उत्पन्न हुए अनेक सिरों वाले सर्पों का 'क्रोधवश' नामक एक समुदाय रहता है। उनमें कहुक, तक्षक, कालिया और सुषेण आदि प्रधान नाग हैं। नारद मुनि के अनुसार, पाताल लोक में सूर्य का प्रकाश नहीं है, लेकिन नागों के सिर की मणियां ही सूर्य जितना प्रकाश करती है. पाताल सात माने गए हैं । पहला अतल, दूसरा वितल, तीसरा सुतल, चौथा तलातल, पाँचवाँ महातल, छठा रसातल और सातवाँ पाताल ।

नाग जाति का जनम

कद्रू जो प्रजापति दक्ष की कन्या हैं तथा कश्यप मुनि की पत्नी, से ही सम्पूर्ण नाग जाती का जन्म हुआ हैं, इसीलिए उन्हें नाग माता के नाम से भी जाना जाता हैं। देवी मनसा, जो भगवान शिव की बेटी हैं,और जिनका विवाह जरत्कारु नाम के ऋषि के साथ हुआ था उन्हें भी नाग माता कहा जाता हैं | एक समय राजा जनमेजय द्वारा, अपने पिता के नाग दंश से मृत्यु हो जाने पर, नागों को भस्म कर देने वाला नाग यज्ञ हुआ। परिणामस्वरूप सभी नाग, यज्ञ में गिरकर भस्म होने लगे, तदनंतर देवी मनसा के पुत्र आस्तिक द्वारा, ऐसा उपाए किया गया, जिससे नाग यज्ञ बंद हुआ और सभी नागों की रक्षा हुई, तभी से देवी मनसा भी नाग माता के

नाम से विख्यात हैं। नाग प्रजाति के मुख्य 12 नाग हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं- 1. अनंत 2. कुलिक 3. वासुकि 4. शंकुफला 5. पद्म 6. महापद्म 7. तक्षक 8. कर्कोटक 9. शंखचूड़ 10. घातक 11. विषधान 12. शेष नाग। नागा आदिवासी' का संबंध भी नागों से ही माना गया है। छत्तीसगढ़ के बस्तर में भी नल और नाग वंश तथा कवर्धा के फणि-नाग वंशियों का उल्लेख मिलता है। पुराणों में मध्यप्रदेश के विदिशा पर शासन करने वाले नाग वंशीय राजाओं में शेष, भोगिन, सदाचंद्र, धनधर्मा, भूतनंदि, शिशुनंदि या यशनंदि आदि का उल्लेख मिलता है।

लोक

विस्तृत वर्गीकरण के मुताबिक तो 14 लोक हैं- 7 तो पृथ्वी से शुरू करते हुए ऊपर और 7 नीचे। ये हैं- भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपोलोक और ब्रह्मलोक। इसी तरह नीचे वाले लोक हैं- अतल, वितल, सतल, रसातल, तलातल , महातल और पाताल।

पाताल में जाने के रास्ते : आपने धरती पर ऐसे कई स्थानों को देखा या उनके बारे में सुना होगा जिनके नाम के आगे पाताल लगा हुआ है, जैसे पातालकोट, पातालपानी, पातालद्वार, पाताल भैरवी, पाताल दुर्ग, देवलोक पाताल भुवनेश्वर आदि।नर्मदा नदी को भी पाताल नदी कहा जाता है। नदी के भीतर भी ऐसे कई स्थान होते हैं, जहां से पाताल लोक जाया जा सकता है। समुद्र में भी ऐसे कई रास्ते हैं, जहां से पाताल लोक पहुंचा जा सकता है। धरती के 75 प्रतिशत भाग पर तो जल ही है। पाताल लोक कोई कल्पना नहीं। पुराणों में इसका विस्तार से वर्णन मिलता है।पाताल लोक में नाग, दैत्य, दानव और यक्ष रहते हैं

देवी-देवता

33 करोड़ देवी-देवता हैं। 33 कोटि देवी-देवताओं में आठ वसु, ग्यारह रुद्र, बारह आदित्य, इंद्र और प्रजापति शामिल हैं।

धर्म के अनुसार, तीन भगवान दुनिया पर राज करते हैं। ब्रह्मा: निर्माता; विष्णु: पालनकर्ता और शिव: संहारक। भगवान विष्णु ने

संकट के समय अलग-अलग रूपों में अवतार लेकर दुनिया की रक्षा का काम किया। दुनिया पर शासन करने वाले तीन भगवानों की पत्नियाँ हैं और वे देवियाँ भी हैं।

पत्नियाँ हैं और वे देवियाँ भी हैं।

शेषनाग

शेषनाग यानी- सहस्र फनों वाला नाग. ब्रह्मांड का पहला नाग इन्हें ही माना गया है, चूंकि सबसे पहले यही पैदा हुए थे. नागों की उत्पत्ति प्रजापति कश्यप की पत्नी कद्रू से हुई, जिन्होंने एक सहस्त्र नागों को पुत्र **रूप** में पाने की कामना की थी. **शेषनाग** उनके सबसे बड़े पुत्र हैं. **जब संसार में पाप बहुत अधिक बढ़ गए थे तब भगवान विष्णु ने विश्व का उद्धार किया था। शेषनाग 'अनंत' अर्थात जिसकी कोई सीमा नहीं, का प्रतीक है। भगवान विष्णु उपयुक्त समय पर मानव जाति का मार्ग दर्शन करते हैं। यही कारण है कि उन्हें साँपों के बिस्तर पर लेटा हुआ दिखाया जाता है।देवी कद्रू ने ऋषि कश्यप से 1000 पुत्रों का वरदान मांगा था, जिसके बाद 1000 अंडों की उत्पत्ति हुई. सभी पुत्रों में सबसे पराक्रमी पुत्र शेषनाग था. देवी कूद्र की वरदान की वजह से नागों का जन्म हुआ, इसलिए इनको नाग माता के नाम से भी जाना जाता है. शेषनाग को अनंत नाम से भी पुकारते हैं. तक्षक नाग** नागवंश के शक्तिशाली नागों में से एक माना जाता है। ऐसी भी कथा है कि पहले नागराज शेषनाग हुए फिर वासुकी और फिर तक्षक भी नागों के राजा हुए। इनके कारण ही नागपंचमी के दिन नागों की पूजा होती है।

शिव नाग नागिन के देवता क्यों हैं

शिव का नाग धारण करना निर्भयता और शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। सांप हमेशा अपने विष के लिए आशंकित रहते हैं, और इस तरह शक्तिशाली होते हैं। तो, शिव के शरीर और गर्दन पर एक सांप होने से पता चलता है कि वे सभी भय और कमजोरियों को दूर करेंगे, और अपने भक्तों की रक्षा करेंगे।

भगवान विष्णु को कैसे प्रसन्न करें

विष्णु की पूजा सभी मनोरथ की पूर्ति के लिए उत्तम फलदायी मानी गई है. श्रीहरि को उनके प्रिय फूल अर्पित करने से वह जल्द प्रसन्न होते हैं.चंपक पुष्प-चंपक का फूल भगवान विष्णु और श्रीकृष्ण को बेहद प्रिय है. मान्यता है गुरुवार को श्रीहरि की पूजा में चंपक के फूल चढ़ाने से बैकुंठ की प्राप्ति होती है.

भगवान ब्रह्मा को कैसे प्रसन्न करेंब्रह्मा सनातन धर्म के अनुसार सृजन के देव हैं। हिन्दू दर्शनशास्त्रों में ३ प्रमुख देव बताये गये है जिसमें ब्रह्मा सृष्टि के सर्जक, विष्णु पालक और महेश विलय करने वाले देवता हैं

भगवान शिव को कैसे प्रसन्न करेंभगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए स्नानादि करके सफेद, हरे, पीले, लाल या आसमानी रंग के वस्त्र धारण करके पूजा करें. पूजा में भगवान भोलेनाथ को अक्षत यानि चावल अर्पित करें. ध्यान रहे चावल खंडित यानि टूटा ना हो. सोमवार के दिन दही, सफेद वस्त्र, दूध और शकर का दान करना श्रेष्ठ माना जाता है.

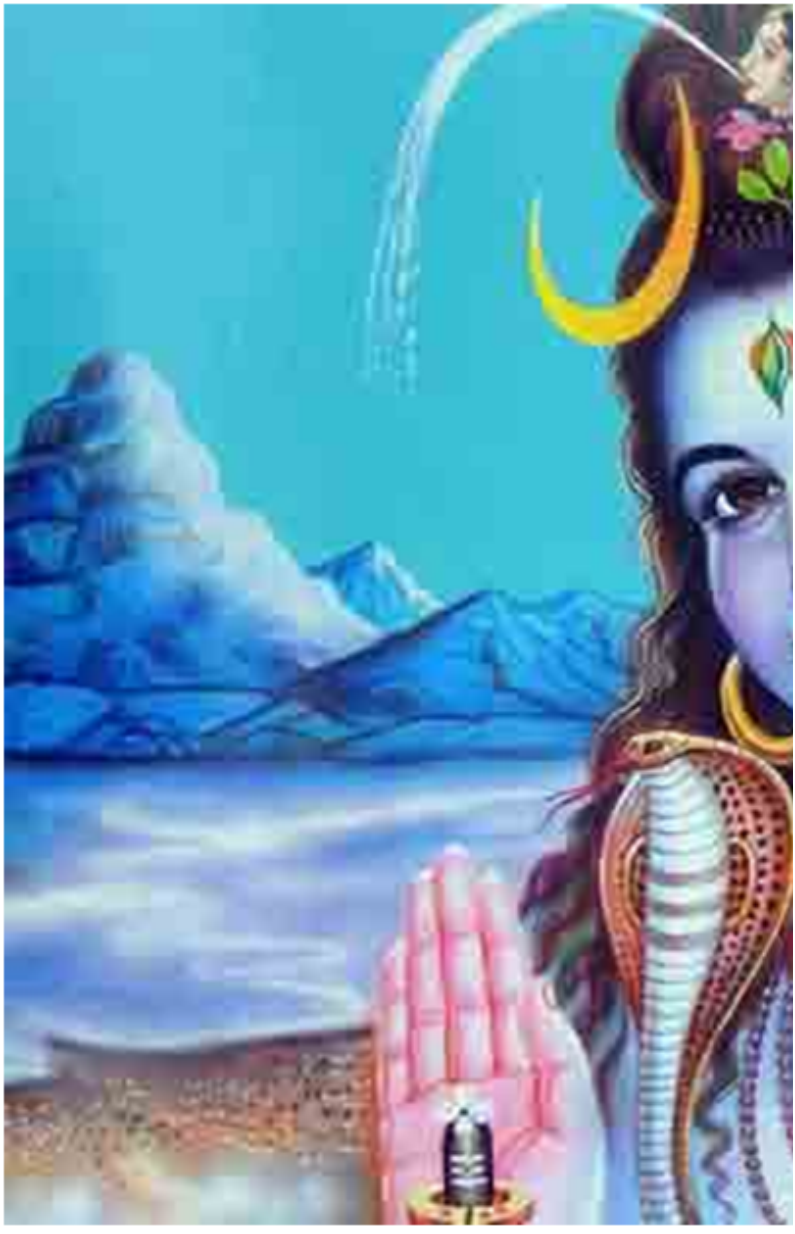

ओम तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात।

ऊँ हौं जूं सः ऊँ भुर्भवः स्वः ऊँ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। ऊर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ऊँ भुवः भूः स्वः ऊँ सः जूं हौं ऊँ।। ऊँ नमः शिवाय।। ओम साधो जातये नमः

तांडव नृत्य

ऐसा में जब शिवजी को क्रोध आता है तो वे तांडव नृत्य करते हैं और जब क्रोध वे ते अपना तीसरा नेत्र खोल देते हैं तो जो भी सामने होता है वह भस्म हो जाता है। परंतु दूसरा जब वे डमरू बजाते हुए तांडव करते हैं तो इसका अर्थ यह है कि वे आनंदित हैं, प्रकृति में आनंद की बारिश हो रही है। ऐसे समय में शिव परम आनंद से पूर्ण रहते हैं।

नाग नागिन की शक्ति

ऐसी मान्यताएं हैं कि जो सांप 100 साल तक जीवित रह जाते हैं उनमें इच्छा के अनुसार शरीर धारण की शक्ति आ जाती है। एक नाग और नागिन में कई शक्तियां होती हैं जैसे रूप बदलाना किसी का रूप लेना समय को कुछ समय तक लोकनावह किसी को कुछ भी भुला सकती है वह नाग रेखा बना सकता है जिसा कोई भी खंडित नहीं कर सकता नाग नागिन किसी इंसान को सम्मोहित करने की शक्ति होती है सुनने की शक्ति तेज होती है|सांप की एक मुख्य शक्ति होती है उसका जहर|यह उसकी मुख्य शक्ति है जहाँ वे किसी को भी मार देते हैंसांपों के बारे में एक बड़ी प्रचलित मान्यता है कि यह अपने साथी की मौत का बदला लेते हैं। सांपों की आंखें कैमरे की तरह होती है जिससे सांप को मारने वाले व्यक्ति की आंखों में उसकी तस्वीर छप जाती है। इस तस्वीर को देखकर सांप बदला लेता है। एक धारणा है कि सांप बीन की आवाज सुनता है और उसके आकर्षित होता है।

ऐसा माना जाता है कि इच्छाधारी नागिन के पास एक ऐसा रत्न होता है जो किसी हीरे से भी बहुत कीमती होता है। इस रत्न को नागमणि के रूप में पहचाना जाता है। जिस भी नाग नागिन के पास नागमणि हो उसे बहुत शक्तिशाली माना जाता है और वह जिंदगी भर उसकी रक्षा करते हैं। इसके अलावा ऐसा भी माना जाता है कि जिस इंसान के पास नागमणि हो उसकी किस्मत बदल जाती है और उसे कई अलौकिक शक्तियां प्राप्त होती हैं।यह शेष नागिन के पेट में होती है

अमृत कलश

"भगवान(विष्णु) के आदेशानुसार इन्द्र देव ने समुद्र मंथन से अमृत निकलने की बात बलि को बताया। असुरराज बलि ने देवराज(देवताओं के राजा) इन्द्र से समझौता कर लिया और समुद्र मंथन के लिये तैयार हो गये। मन्दराचल पर्वत को मथनी तथा वासुकी नाग को नेती बनाया गया। वासुकी के नेत्र से नेतङ(राजपुरोहित) का उद्भव हुआ। कहते हैं कि **क्षीरसागर में ही समुद्र मंथन हुआ था**। इस मंथन के दौरान मंदरांचल पर्वत को मथनी और वासुकी नाग को रस्सी बनाया गया था। देवता और और दैत्यों ने मिलकर इस पहाड़ के द्वारा समुद्र को मंथन किया था। इस मंथन से पहले कालकूट नामक विष निकलने के बाद 14 तरह के अद्भुत चीजें प्राप्त हुई थी जिसमें अंतिम था अमृत। ऐसे सभी स्थल यह व्यक्त करते हैं कि अमृत कोई ऐसा तत्व है, जिसके **द्वरा मृत्यु से छुटकारा मिल सकता है**।

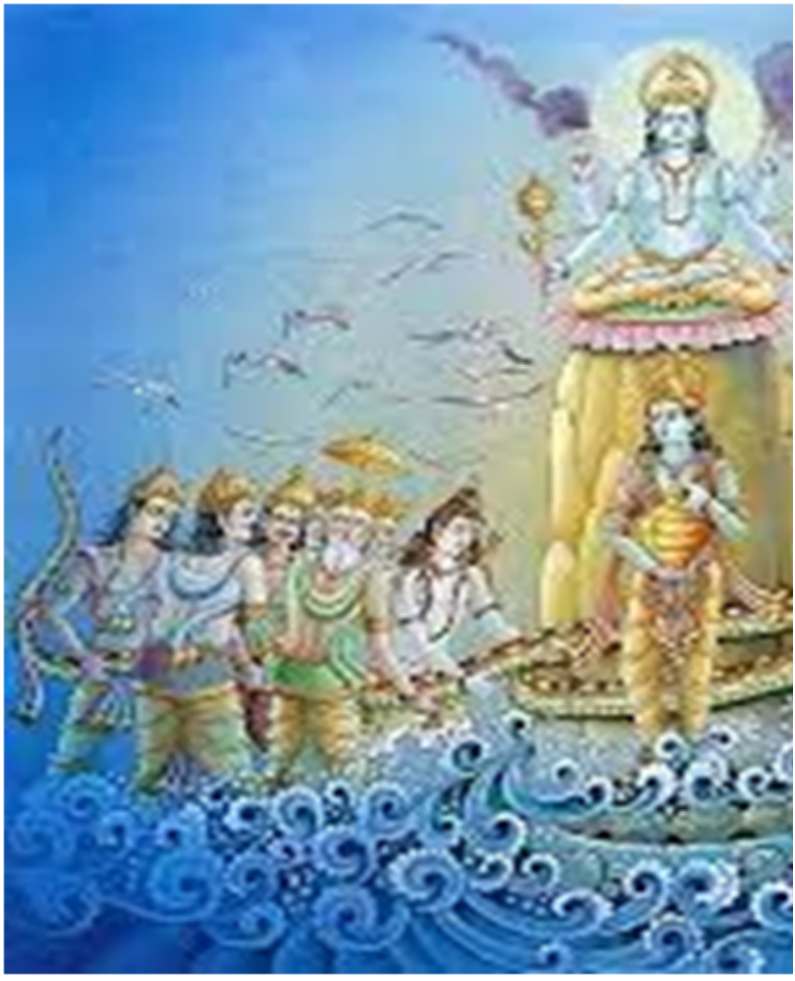

समुद्र मंथन से रत्न के रूप में मां लक्ष्मी भी निकली थीं

- कामधेनु गाय भी समुद्र मंथन से निकली थी
- ऐरावत हाथी समुद्र मंथन से निकला था

समुद्र मंथन और उससे जुड़ीं कहानियां हमेशा से ही सभी को आकर्षित करती हैं। कहा जाता है कि यह रोचक घटना बिहार के बांका में घटित हुई थी। बांका के मंदार पर्वत के पास पापहारिणी तालाब समुद्र मंथन का गवाह बना था। विष्णु पुराण से समुद्र मंथन के बारे में जानकारी मिलती है। दरअसल, महर्षि दुर्वासा के श्राप के कारण स्वर्गलोक धन, वैभव और ऐश्वर्य विहीन हो गया था। इस विकट परिस्थिति में स्वर्गलोक के सभी देवता परेशान हो गए और वे समाधान खोजते-खोजते भगवान विष्णु के पास गए। भगवान विष्णु ने उपाय सुझाया। उनका मत था कि असुरों के साथ देवताओं को समुद्र मंथन करना चाहिए। इससे अमृत निकलेगा, जिसे सभी देवता ग्रहण करके फिर से अमर हो जाएंगे। असुरों, वासुकि नाग और मंदार पर्वत की सहायता से देवताओं ने समुद्र मंथन किया। इसके परिणामस्वरूप 14 रत्न प्राप्त हुए। सभी 14 रत्नों से जीवन में बहुत कुछ सीखा जा सकता है। ऐसा मत है कि इन्हीं सीख को अपनाकर देवता पुनः देव गुणों से सम्पन्न हुए।

14 रत्नों के महत्वपूर्ण रहस्य ये हैं-

कालकूट विष रत्न

समुद्र मंथन में सबसे पहले यही रत्न निकला, इसे भगवान शिव ने ग्रहण किया था। इस रत्न का राज यह है कि मन को मथने पर सबसे बुरे विचार पहले निकलते हैं। हमें कभी भी बुराइयों को मन के अंदर उतरने नहीं देना चाहिए। बल्कि उनका त्याग करना चाहिए।

कामधेनु रत्न

इस रत्न को ऋषि ने अपने पास रखा। इसका राज यह है कि जब मन से बुरे विचार निकल जाते हैं, तब हमारा मन कामधेनु की तरह पवित्र हो जाता है।

उच्चैश्रवा घोड़ा रत्न

कहा जाता है कि यह घोड़ा मन की गति के समान चलता था। इस रत्न को राजा बलि ने अपने पास रखा था। इस रत्न का राज यह है कि जब भी मन भटकता है, बुराइयों से लैस हो जाता है।

ऐरावत हाथी रत्न

इस रत्न को भगवान इंद्र ने अपने पास रखा। इसका राज यह है कि जब मन बुराइयों से दूर होगा तब ही बुद्धि शुद्ध होगी। उजाले सी चमकेगी।

कौस्तुभ मणि रत्न

इस रत्न को भगवान विष्णु ने हृदय पर धारण किया। इसका राज यह है कि जब हमारे मन से बुरे विचार निकल जाते हैं, बुद्धि शुद्ध हो जाती है तब मन में भक्ति का सूत्रपात होता है।

कल्पवृक्ष रत्न

इस रत्न को देवताओं ने स्वर्ग में लगाया था। इस वृक्ष को इच्छा पूर्ति करने वाला वृक्ष भी माना जाता है। इस रत्न का राज यह है कि भक्ति के समय अथवा मन के मंथन के दौरान अपनी सम्पूर्ण इच्छाओं को दूर रखना चाहिए।

अप्सरा रंभा रत्न

यह रत्न देवता के पास रहा था। यह कामवासना और स्वार्थ का पर्याय है। इसका राज यह है कि हमें भक्ति के दौरान लालच नहीं करना चाहिए।

देवी लक्ष्मी रत्न

इस रत्न को देवता, ऋषि और दानव सभी अपने पास रखना चाहते थे। किंतु लक्ष्मी जी ने भगवान विष्णु के पास रहना स्वीकार किया। जिसका अर्थ यह है कि धन उन लोगों के पास जाता है, जो कर्म करना जानते हैं।

वारुणी देवी रत्न

वारुणी का अर्थ मदिरा होता है। इसको दानवों ने ग्रहण किया था। इसका राज यह है कि नशा करने वाला बुराई से दब जाता है।

चंद्रमा रत्न

इसे भगवान शंकर ने मस्तक पर धारण किया था। इसका सार है कि जब हमारा मन सभी बुराइयों से मुक्त हो जाता है, तब हमें शांति महसूस होती

पारिजात वृक्ष रत्न

इसे सभी देवताओं ने ग्रहण किया, क्योंकि इसे स्पर्श करते ही थकान दूर हो जाती थी। इसका राज यह है कि जब मन में शांति आ जाती है, तब शरीर की थकान भी दूर हो जाती है।

पांचजन्य शंख रत्न

भगवान विष्णु ने इसे अपने पास रखा। इसका राज यह है कि थकान दूर होने के बाद मन भक्ति में लीन हो जाता है।

भगवान धन्वंतरि एवं अमृत कलश रत्न

दरअसल अंत में 13वें रत्न के रूप में भगवान धन्वंतरि प्रकट हुए। उनके हाथ में 14वें रत्न के रूप में अमृत कलश था। भगवना धन्वंतरि ने सभी देवताओं को अमृत का सेवन कराया और श्राप से मुक्ति दिलाई। इसका राज यह है कि बुराइयों को दूर करके जब हम भक्ति में लीन हो जाते हैं, तब भगवान का आशीर्वाद मिलना तय हो जाता है।

असुरअसुर तीन प्रकार के बताए गए हैं दैत्य,दानव और राक्षस इनके अतिरिक्त भूत , प्रेत आदि बुरी आत्मों को भी असुर की श्रेणी में ही रखा गया है। जिस प्रकार असुर तीन प्रकार के बताए गए हैं उसी प्रकार असुरों की माता भी तीन हैं। दैत्यों की माता दिति,दानवों की माता दनु और राक्षसों की माता सुरसा। **नरकासुर** - कृष्ण और उनकी पत्नी सत्यभामा द्वारा सुदर्शन चक्र के साथ मारे गए एक शक्तिशाली असुर शासक। **अदिति के गर्भ से देवता और दिति के गर्भ से दैत्यों की उत्पत्ति हुई**, बाकी अन्य पत्नियों से गंधर्व, अप्सरा, राक्षस, पशु-पक्षी, सांप, बिच्छु, जलचर जंतु आदि जीव-जंतु जगत की उत्पत्ति हुई। दैन्यों को असुर और राक्षस भी कहा गया है। दैत्यों की प्रवृत्तियाँ आसुरी थीं। आगे चलकर उनका देवताओं या सुरों से युद्ध भी हुआ।असुराचार्य, भृगु ऋषि तथा दिव्या के पुत्र जो शुक्राचार्य के नाम से अधिक विख्यात हैं। इनका जन्म का नाम 'शुक्र उशनस' है। पुराणों के अनुसार यह **असुरों** (दैत्य , दानव और राक्षस) के **गुरु** तथा पुरोहित **थे**। **रावण** को राक्षसों का अधिपति बनाया गया, तब रावण ने राक्षस जाति के खोए हुए सम्मान को पुन: प्राप्त करने का वचन लिया और अपना विश्व विजय अभियान शुरू किया। इस विजय अभियान में रावण ने स्वयं भगवान शिव से भी टक्कर ली।

नागपंचमी

नागपंचमी मनाने के संबंध में एक मत यह भी है कि अभिमन्यु के बेटे राजा परीक्षित ने तपस्या में लीन ऋषि के गले में मृत सर्प डाल दिया था। इस पर ऋषि के शिष्य श्रृंगी ऋषि ने क्रोधित होकर शाप दिया कि यही सर्प सात दिनों के पश्चात तुम्हे जीवित होकर डस लेगा,ठीक सात दिनों के पश्चात उसी तक्षक सर्प ने जीवित होकर राजा को डसा।

शेष नागिन को नाग लक्ष्मी भी कहा जाता है

नागलक्ष्मी को भगवान शेषनाग की पत्नी कहा जाता है। त्रेतायुग के भीतर शेष नाग भगवान लक्ष्मण थीं। उनकी **एक पत्नी थी, जिसका नाम उर्मिला था** जो सीता की करीबी थी और उनकी छोटी बहन थी।

नागकन्या :

कुंती पुत्र अर्जुन ने पाताल लोक की एक नागकन्या से विवाह किया था जिसका नाम उलूपी था। वह विधवा थी। अर्जुन से विवाह करने के पहले उलूपी का विवाह एक बाग से हुआ था जिसको गरूड़ ने खा लिया था। अर्जुन और नागकन्या उलूपी के पुत्र थे अरावन जिनका दक्षिण भारत में मंदिर है और हिजड़े लोग उनको अपना पति मानते हैं। भीम के पुत्र घटोत्कच का विवाह भी एक नागकन्या से ही हुआ था जिसका नाम अहिलवती था और जिसका पुत्र वीर योद्धा बर्बरीक था।

नाक कुल की भूमि :

यह सभी नाग को पूजने वाले नागकुल थे इसीलिए उन्होंने नागों की प्रजातियों पर अपने कुल का नाम रखा। जैसे तक्षक नाग के नाम पर एक व्यक्ति जिसने अपना 'तक्षक' कुल चलाया। उक्त व्यक्ति का नाम भी तक्षक था जिसने राजा परीक्षित की हत्या कर दी थी। बाद में परीक्षित के पुत्र जन्मजेय ने तक्षक से बदला लिया था।नागा आदिवासी' का संबंध भी नागों से ही माना गया है। छत्तीसगढ़ के बस्तर में भी नल और नाग वंश तथा कवर्धा के फणि-नाग वंशियों का उल्लेख मिलता है। पुराणों में मध्यप्रदेश के विदिशा पर शासन करने वाले नाग वंशीय राजाओं में शेष, भोगिन, सदाचंद्र, धनधर्मा, भूतनंदि, शिशुनंदि या यशनंदि आदि का उल्लेख मिलता है। एक समय ऐसा था जबकि नागा समुदाय पूरे भारत (पाक-बांग्लादेश सहित) के शासक थे। उस दौरान उन्होंने भारत के बाहर भी कई स्थानोंपर अपनी विजय पताकाएं फहराई थीं। तक्षक, तनक और तुश्त नागाओं के राजवंशों की लम्बी परंपरा रही है। इन नाग वंशियों में ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि सभी समुदाय और प्रांत के लोग थे।

नाग और नाग जाति :

जिस तरह सूर्यवंशी, चंद्रवंशी और अग्निवंशी माने गए हैं उसी तरह नागवंशियों की भी प्राचीन परंपरा रही है। महाभारत काल में पूरे भारत वर्ष में नागा जातियों के समूह फैले हुए थे। विशेष तौर पर कैलाश पर्वत से सटे हुए इलाकों से असम, मणिपुर, नागालैंड तक इनका प्रभुत्व था। ये लोग सर्प पूजक होने के कारण नागवंशी कहलाए। कुछ विद्वान मानते हैं कि शक या नाग जाति हिमालय के उस पार की थी। अब तक तिब्बती भी अपनी भाषा को 'नागभाषा' कहते हैं। एक सिद्धांत अनुसार ये मूलत: कश्मीर के थे। कश्मीर का 'अनंतनाग' इलाका इनका गढ़ माना जाता था। कांगड़ा, कुल्लू व कश्मीर सहित अन्य पहाड़ी इलाकों में नाग ब्राह्मणों की एक जाति आज भी मौजूद है। नाग वंशावलियों में 'शेष नाग' को नागों का प्रथम राजा माना जाता है। शेष नाग को ही 'अनंत' नाम से भी जाना जाता है। इसी तरह आगे चलकर शेष के बाद वासुकी हुए फिर तक्षक और पिंगला। वासुकी का कैलाश पर्वत के पास ही राज्य था और मान्यता है कि तक्षक ने ही तक्षकशिला (तक्षशिला) बसाकर अपने नाम

से 'तक्षक' कुल चलाया था। उक्त तीनों की गाथाएं पुराणों में पाई जाती हैं।

'मंत्र' शेषनाग

ब्रह्मलोके च ये सर्पा शेषनाग पुरोगमाः। नमोऽस्तु तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीता: मम सर्वदा ॥ विष्णु लोके च ये सर्पाः वासुकिः प्रमुखादयः।

मंत्र'शिवा

ओम तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात।

ऊँ हौं जूं सः ऊँ भुर्भवः स्वः ऊँ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। ऊर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ऊँ भुवः भूः स्वः ऊँ सः जूं हौं ऊँ।। ऊँ नमः शिवाय।। ओम साधो जातये नमः

मंत्र विष्णु

ॐ नमोः नारायणाय नमः। ॐ नमोः भगवते वासुदेवाय नमः।

ॐ चतुर्मुखाय विद्महे, कमण्डलु धाराय धीमहि, तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात्॥ ॐ परमेश्वर्याय विद्महे, परतत्वाय धीमहि, तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात्॥

शुभ
लाभ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

भगवान शिव जी के सभी अवतारों के नाम

1. वीरभद्र अवतार|
2. पिप्पलाद अवतार |
3. नंदी अवतार |
4. भैरव अवतार|
5. अश्वत्थामा अवतार|
6. शरभावतार |
7. ग्रह पति अवतार|
8. ऋषि दुर्वासा अवतार |
9. हनुमान |
10. वृषभ अवतार |
11. यतिनाथ अवतार |
12. कृष्णदर्शन अवतार |
13. अवधूत अवतार |
14. भिक्षुवर्य अवतार |
15. सुरेश्वर अवतार |
16. किरात अवतार |
17. ब्रह्मचारी अवतार |
18. सुनटनर्तक अवतार |
19. यक्ष अवतार |

1: वीरभद्र अवतार

भगवान भोलेनाथ को यज्ञ में ना बुलाने की वजह से जब सती माता ने प्रजापति दक्ष के द्वारा आयोजित यज्ञ कुंड में अपने प्राणों की आहुति दे दी थी तो भगवान भोलेनाथ अत्यधिक क्रोधित हुए और उन्होंने वीरभद्र अवतार को प्रकट किया।

इस अवतार को प्रकट करने के लिए भगवान भोलेनाथ ने अपने सिर से एक जटा उखाड़ी और उसे पर्वत पर पटक दिया और इसी जटा से वीरभद्र नाम का एक अत्यंत बलशाली और पराक्रमी अवतार पैदा हुआ। भगवान भोलेनाथ के आदेश पर वीरभद्र ने प्रजापति दक्ष के यज्ञ का विध्वंस कर दिया और तलवार से प्रजापति दक्ष का सिर काट कर उसे मृत्युदंड दिया।

इसके पश्चात भगवान भोलेनाथ ने प्रजापति दक्ष को बकरे का सर दीया और दक्ष फिर से जीवित हुए। वहीं देवी सती के शरीर को लेकर के भगवान भोलेनाथ यहां वहां घूमने लगे और जहां जहां देवी के शरीर के अलग-अलग अंग गिरे वहां वहां शक्तिपीठ बन गए। इस प्रकार देश में 52 शक्ति पीठ हुए।

2: पिप्पलाद अवतार

भोलेनाथ के दूसरे अवतार पिप्पलाद हैं। इन्होंने एक बार जब देवताओं से पूछा कि ऐसी क्या वजह थी कि मेरे पिताजी दधीचि मुझे जन्म से पहले ही छोड़कर मृत्यु लोग चले गए तो देवताओं ने बताया कि इसके पीछे शनि ग्रह की दृष्टि जिम्मेदार है। इस पर पिप्पलाद काफी क्रोधित हुए और उन्होंने शनि को नछत्र मंडल से गिरने का श्राप दे दिया।

इसके पश्चात देवताओं की प्रार्थना पर पिप्पलाद ने शनि को इस बात पर माफ कर दिया कि शनि किसी भी व्यक्ति को उसके पैदा होने से लेकर के 16 साल की उम्र तक कभी भी कष्ट नहीं देगा और तभी से पिप्पलाद का ध्यान करने से ही शनि ग्रह की पीड़ा समाप्त हो जाती है।

3: नंदी अवतार

शिलाद नाम के एक ऋषि का वंश समाप्त होने पर उनके पूर्वजों ने उनसे संतान पैदा करने के लिए कहा। इस पर शिलाद ने मृत्युहीन संतान की कामना से भगवान शंकर की तपस्या प्रारंभ की और भगवान शिव ने प्रसन्न होकर के शिलाद ऋषि को वरदान दिया।

और एक दिन खेत की जुताई करते समय उन्हें एक बालक जमीन से प्राप्त हुआ जिसका नाम उन्होंने नंदी रखा और भगवान भोलेनाथ के द्वारा

नंदी को अपना गण अध्यक्ष बनाया गया।

नंदी की शादी मरुतो की पुत्री सुयशा के साथ हुई। आज हर भोलेनाथ के मंदिर के सामने ही नंदी के तौर पर बैल की आकृति होती है।

4: भैरव अवतार

भैरव अवतार भी भगवान भोलेनाथ का ही है। एक बार ब्रह्मा भगवान और विष्णु भगवान आपस में एक दूसरे को श्रेष्ठ बता रहे थे तभी वहां से एक पुरुष की आकृति दिखाई दी। इस पर ब्रह्मा जी ने कहा कि चंद्रशेखर तुम मेरी शरण में चले जाओ।

यह बातें सुनकर के भगवान भोलेनाथ अत्यंत क्रोधित हुए और उन्होंने उस पुरुष आकृति से कहा कि काल की तरह शोभित होने की वजह से आप साक्षात्कार कालराज हैं और भीषण होने की वजह से आप भैरव हैं।

इस प्रकार से भगवान भोलेनाथ से प्राप्त वरदान का इस्तेमाल करते हुए कालभैरव ने अपनी उंगली के नाखून के द्वारा ब्रह्मा भगवान के 5वे सिर को उनके शरीर से अलग कर दिया और इस हत्या से काल भैरव बाबा को ब्रह्म हत्या का पाप लगा। यह पाप काशी में जाकर के खत्म हुआ।

5: अश्वत्थामा

भगवान भोलेनाथ के पांचवे अवतार को अश्वत्थामा का नाम दिया गया था। यह भगवान भोलेनाथ के अंशावतार थे। इनकी उत्पत्ति गुरु द्रोणाचार्य से हुई थी।

द्रोणाचार्य के द्वारा भगवान भोलेनाथ को पुत्र के तौर पर पाने के लिए काफी कठिन तपस्या की गई थी और भगवान भोलेनाथ ने उन्हें प्रसन्न होकर के यह वरदान दिया कि वह उनके पुत्र के तौर पर पैदा होंगे। और समय आने पर अश्वत्थामा नाम का पुत्र गुरु द्रोणाचार्य को प्राप्त हुआ। कहते हैं कि वर्तमान के समय में भी अश्वत्थामा अजर अमर है और वह धरती पर ही विचरण कर रहे हैं।

6: शरभावतार

भगवान शिव के द्वारा जो छठा अवतार लिया गया था उसे शरभावतार कहा गया। इस अवतार में भगवान भोलेनाथ का आधा स्वरूप हिरण और आधा स्वरूप शरभ पक्षी था।

जब हिरण्यकशिपु राक्षस का वध करने के पश्चात भी नरसिंह देवता का क्रोध शांत नहीं हुआ तो देवताओं के आव्हान पर नरसिंह देवता का क्रोध शांत करने के लिए भगवान भोलेनाथ ने इस अवतार को ग्रहण किया था और इसी अवतार में वह नरसिंह भगवान के पास पहुंचे और उनकी स्तुति की परंतु फिर भी नरसिंह भगवान शांत नहीं हुए।

इसके बाद भगवान के इस अवतार ने नरसिंह भगवान को अपने पूछ मे लपेट लिया और उसे लेकर के कहीं चले गए। तब जाकर नरसिंह भगवान का क्रोध शांत हुआ।

7: गृहपति अवतार

ग्रह पति अवतार भगवान शंकर जी का सातवां अवतार है। विश्वानर नाम के एक ऋषि और उनकी पत्नी शुचिष्मती किसी इलाके में रहते थे। शुचिष्मती की संतान नहीं थी तो उन्होंने अपने पति से भोलेनाथ की तरह संतान प्राप्त करने की इच्छा जाहिर की।

इस पर ऋषि ने बनारस जाकर के भोलेनाथ के वीरेश लिंग की साधना की और एक दिन साधना के दरमियान वीरेश लिंग के बीच में एक बालक दिखाई दिया।

तो ऋषि ने उसकी पूजा की और पूजा से प्रसन्न होकर भगवान भोलेनाथ ने ऋषि की पत्नी के पेट से अवतार लेने का वरदान दिया और बाद में शुचिष्मती के गर्भ से उन्होंने ग्रह पति अवतार के तौर पर जन्म लिया।

8: ऋषि दुर्वासा

पुत्र प्राप्ति के लिए सती अनुसूया के पति ऋषि अत्री ने एक पर्वत पर कठोर तपस्या की और उनकी तपस्या से खुश होकर के ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों उनके आश्रम पर पहुंचे और तीनों ने कहा कि हमारे अंग से ही तुम्हारे तीन पुत्र पैदा होंगे।

जो हर जगह विख्यात होंगे और तुम्हारा सम्मान करेंगे और समय गुजरने के पश्चात ब्रह्मा जी के अंश से चंद्रमा, विष्णु जी के अंश से दत्तात्रेय और भोलेनाथ के अंश से मुनिवर दुर्वासा पैदा हुए। इस प्रकार भोलेनाथ जी का आठवां अवतार ऋषि दुर्वासा हुए जो अपने आप में एक प्रकांड ज्ञानी और सिद्धि धारक थे।

9: हनुमान

देवता और दानवो के बीच जब विष्णु जी के मोहनी रूप के द्वारा अमृत बांटा जा रहा था तो भगवान भोलेनाथ मोहिनी रूप को देख करके अपने आप को रोक ना सके और उनका वीर्य निकल गया और सप्त ऋषियों ने भोलेनाथ जी के वीर्य को कुछ पत्ते पर इकट्ठा कर लिया।

और समय आने पर इसी वीर्य के द्वारा वानर राज केसरी की पत्नी अंजनी के कान के माध्यम से गर्भ में स्थापित किया गया और उसी से महा पराक्रमी, महा बलशाली और प्रबल राम भक्त भगवान श्री हनुमान जी का जन्म हुआ जिन्हें 1000 से भी अधिक हाथियों का बल प्राप्त था और इन्हें भूत-प्रेत का काल माना जाता है।

10: वृषभ अवतार

धर्म ग्रंथों के अनुसार इस अवतार के अंतर्गत भगवान भोलेनाथ के द्वारा विष्णु जी के पुत्रों का संहार किया गया था। जब भोलेनाथ विष्णु दैत्यो को खत्म करने के लिए पाताल लोग गए थे तो वहां पर उन्हें चंद्रमुखी स्त्रियां दिखाई थी। जिनसे उत्पन्न संताने धरती पर काफी उपद्रव मचाती थी और इसीलिए भोलेनाथ जी ने वृषभ अवतार लेकर के उन विष्णु दैत्यों का खात्मा किया।

11: यतिनाथ अवतार

अर्बुदाचल नाम के पर्वत पर भोलेनाथ के भक्त आहुक-आहुका भील दंपत्ति निवास करते थे। एक बार भगवान भोलेनाथ यति नाथ का भेष बनाकर उनके घर पर गए और रात रुकने की इच्छा जाहिर की।

इस पर आहूका ने अपने पति को गृहस्थ की मर्यादा का स्मरण करवाते हुए खुद धनुष बाण लेकर के बाहर रात बिताने और यति को घर में विश्राम करने देने की सलाह दी।

इस पर आहुक धनुष बाण लेकर के बाहर चले गए और जब सुबह हुई तो यति और आहुका ने देखा कि जंगली जानवरों ने आहुका को खत्म कर दिया है। इससे यति काफी दुखी हुए। तब उन्होंने आहूका को शांत करते हुए कहा कि अगले जन्म में उनका मिलन फिर से उनके पति से होगा।

12: कृष्णदर्शन अवतार

जब नभग के द्वारा यज्ञ भूमि में पहुंचकर वैश्य देव सूक्त के स्पष्ट उच्चारण के द्वारा यज्ञ संपन्न कराया तो उसी समय शिवजी कृष्ण दर्शन अवतार रूप में प्रकट हुए और बोले कि यज्ञ के अवशिष्ट धन पर तो उनका अधिकार है।

और विवाद होने पर श्री कृष्ण दर्शन रूप धारी भोलेनाथ जी ने उसे अपने पिता से ही निर्णय कराने को कहा और नभग ने अपने पिता से पूछा तो पिता ने कहा कि वह पुरुष शंकर भगवान है। यज्ञ में अवशिष्ट वस्तु भोलेनाथ की ही है और इस प्रकार नभग ने शिवजी की स्तुति की।

13: अवधूत अवतार

इंद्र के अहंकार को खत्म करने के लिए भोलेनाथ जी ने अवधूत अवतार लिया था। कहानी के अनुसार बृहस्पति और दूसरे देवता इंद्र के साथ भोलेनाथ जी के दर्शन करने के लिए कैलाश पर्वत पर गए थे और भोलेनाथ जी के द्वारा रास्ते में ही अवधूत का रूप धारण करके इंद्र का रास्ता उनकी परीक्षा लेने के लिए रोका गया।

इंद्र ने बार-बार अवधूत से उनका परिचय पूछा परंतु उन्होंने कुछ नहीं बताया। इस पर क्रोध में आकर के इंद्र ने जैसे ही अवधूत पर अटैक

करने का प्रयास किया वैसे ही उनका हाथ एक ही जगह पर टीका रह गया।

यह सब घटनाक्रम देख कर के बृहस्पति जी ने भगवान भोलेनाथ को पहचान लिया और अवधूत की बहू विधि स्तुति की। इससे प्रसन्न होकर के भोलेनाथ जी के द्वारा इंद्र को क्षमादान दिया गया।।

14: भिक्षुवर्य अवतार

विदर्भ के राजा सत्य रथ के द्वारा कई दुश्मनों का खात्मा किया गया और उनकी पत्नी ने दुश्मनों से छिपकर अपने प्राणों की रक्षा की और एक पुत्र पैदा किया। एक बार रानी जब पानी पीने के लिए सरोवर गई तो घड़ियाल ने उन्हें निगल लिया और उनका पुत्र भूख प्यास से तड़पने लगा।

इस पर शिवजी की प्रेरणा से एक भिखारिन वहां पर पहुंची और तब शिवजी ने एक भिखारी का रूप धारण करके उस भिखारिन को बालक के बारे में बताया और भिखारी से कहा कि वह बालक का पालन पोषण करें और फिर भिखारिन को भोलेनाथ जी ने अपना असली रूप दिखाया।

इसके बाद भिखारीन ने बालक का पालन पोषण किया और बालक ने बड़े होकर के अपने खोए हुए राज पाठ को फिर से हासिल किया।

15: सुरेश्वर अवतार

इस अवतार में भगवान भोलेनाथ एक छोटे से बालक उपमन्यु की भक्ति से प्रसन्न हुए थे और भोलेनाथ भगवान के द्वारा उस बालक को अपनी परम भक्ति का और अहम पद का वरदान दिया गया था।

16: किरात अवतार

महाभारत काल के दरमियान अर्जुन के द्वारा शंकर भगवान को प्रसन्न करने के लिए तपस्या की जा रही थी और तभी दुर्योधन के द्वारा एक राक्षस को अर्जुन को खत्म करने के लिए भेजा गया जो वहां पर सूअर का रूप धारण करके पहुंचा।

अर्जुन के द्वारा सूअर को मारने के लिए बाण से प्रहार किया गया और उसी दरमियान भोलेनाथ जी ने भी किरात अवतार धारण करके उसी सूअर पर बाण चलाया। हालांकि शिवजी की माया अर्जुन पहचान नहीं सके और अर्जुन को लगा कि उनके ही बाढ़ से सूअर की मृत्यु हुई।

इस पर अर्जुन और किरात वेषधारी भोलेनाथ जी के बीच घमासान युद्ध चालू हुआ। अर्जुन की बहादुरी को देख कर के भगवान भोलेनाथ अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने अपना असली रूप अर्जुन को दिखाया और युद्ध में विजय का आशीर्वाद दिया।

17: ब्रह्मचारी अवतार

दक्ष के यज्ञ में जब अपना शरीर खत्म करने के पश्चात दोबारा से सती का जन्म हिमालय के घर में हुआ तो उन्होंने भगवान भोलेनाथ को अपने पति के तौर पर पाने के लिए काफी कठोर तपस्या की। इसी दरमियान पार्वती की परीक्षा लेने के लिए भगवान भोलेनाथ ने एक ब्रह्मचारी का वेश धारण किया और उनके पास पहुंचे।

पार्वती जी के द्वारा ब्रह्मचारी की अच्छी आवभगत की गई और जब ब्रह्मचारी के द्वारा पार्वती से यह पूछा गया कि वह तप क्यों कर रही है तो पार्वती ने अपना उद्देश्य बताया।

इस पर ब्रह्मचारी ने शिवजी की निंदा करना प्रारंभ कर दिया और उन्हें कापालिक तथा श्मशान वासी कहा। यह सुनकर के पार्वती अत्याधिक क्रोधित हुई। हालांकि उनका क्रोध बढ़ने से पहले ही भगवान भोलेनाथ अपने असली रूप में आ गए जिसे देख कर के पार्वती अत्यंत प्रसन्न हुई।

18: सुनटनर्तक अवतार

पार्वती के अभिभावक हिमाचल से पार्वती से विवाह करने के लिए भोलेनाथ जी के द्वारा सुनटनर्तक का अवतार धारण किया गया और हाथ में डमरू लेकर के वह हिमाचल के घर पहुंचे और नृत्य करने लगे।

जिससे वहां पर मौजूद सभी लोग खुश हो गए और जब हिमाचल के द्वारा नटराज से भिक्षा मांगने के लिए कहा गया तो उन्होंने पार्वती से विवाह करने की इच्छा जताई।

इस पर हिमाचल राज काफी क्रोधित हुए। हालांकि थोड़े समय के पश्चात ही शिव जी अपना असली रूप पार्वती को दिखा कर के वहां से चले गए। इसके पश्चात हिमाचल और मैना को ज्ञान हुआ और उन्होंने शिव जी के साथ पार्वती का विवाह करने का निश्चय किया।

19: यक्ष अवतार

देवताओं के अभिमान को तोड़ने के लिए भोलेनाथ जी के द्वारा यक्ष अवतार लिया गया था क्योंकि जब समुद्र मंथन हो रहा था तब उसमें से निकले हुए जहर को भोलेनाथ जी ने अपने गले में ग्रहण करके रोक लिया था और उसके पश्चात जो अमृत कलश निकला।

उसमें से अमृत पान करके सभी देवता तो अमर हो गए और उन्हें अभिमान हो गया कि वह सबसे शक्तिशाली है और इसी अभिमान को खत्म करने के लिए शंकर भगवान के द्वारा यक्ष का रूप धारण किया गया।

और देवताओं के आगे एक तिनका रखा गया और उसे जलाने के लिए, काटने के लिए, उड़ाने के लिए या फिर डुबोने के लिए कहा गया।

हालांकि कोई भी देवता ऐसा नहीं कर सका। तब एक आकाशवाणी हुई जिसमें यह कहा गया कि भगवान भोलेनाथ ही सबसे बलशाली हैं और तब सभी देवताओं ने भोलेनाथ जी से क्षमा याचना की।

भगवान शिव के 11 रुद्र कौन कौन से हैं ?

कपाली, पिंगल, भीम, विरुपाक्ष, विलोहित, शास्ता, अजपाद, आपिर्बुध्य, शम्भू, चण्ड तथा भव

अवतार

1. **महाकाल - शिव के दस प्रमुख अवतारों में पहला अवतार महाकाल को माना जाता है। इस अवतार की शक्ति मां महाकाली मानी जाती हैं। उज्जैन में महाकाल नाम से ज्योतिर्लिंग विख्यात है।**

उज्जैन में ही गढ़कालिका क्षेत्र में मां कालिका का प्राचीन मंदिर है और महाकाली का मंदिर गुजरात के पावागढ़ में है।

2. **तारा - शिव के रुद्रावतार में दूसरा अवतार तार (तारा) नाम से प्रसिद्ध है। इस अवतार की शक्ति तारादेवी मानी जाती हैं।**

पश्चिम बंगाल के वीरभूम में स्थित द्वारका नदी के पास महाश्मशान में स्थित है तारा पीठ। पूर्वी रेलवे के रामपुर हॉल्ट स्टेशन से 4 मील दूरी पर स्थित है यह पीठ।

3.बाल भुवनेश- देवों के देव महादेव का तीसरा रुद्रावतार है बाल भुवनेश। इस अवतार की शक्ति को बाला भुवनेशी माना गया है।

दस महाविद्या में से एक माता भुवनेश्वरी का शक्तिपीठ उत्तराखंड में है। उत्तरवाहिनी नारद गंगा की सुरम्य घाटी पर यह प्राचीनतम आदि शक्ति मां भुवनेश्वरी का मंदिर पौड़ी गढ़वाल में कोटद्वार सतपुली-बांघाट मोटर मार्ग पर सतपुली से लगभग 13 किलोमीटर की दूरी पर ग्राम विलखेत व दैसण के मध्य नारद गंगा के तट पर मणिद्वीप (सांगुड़ा) में स्थित है।

इस पावन सरिता का संगम गंगाजी से व्यासचट्टी में होता है, जहां

भगवानवेदव्यासजीनेश्रुतिएवंस्मृतियोंकोवेदपुराणोंकेरूपमेंलिपिबद्धकिया

था।

4. षोडश श्रीविद्येश- भगवान शंकर का चौथा अवतार है षोडश श्रीविद्येश। इस अवतार की शक्ति को देवी षोडशी श्रीविद्या माना जाता है। 'दस महा-विद्याओं' में तीसरी महा-विद्या भगवती षोडशी है, अतः इन्हें तृतीया भी कहते हैं।

भारतीय राज्य त्रिपुरा के उदरपुर के निकट राधाकिशोरपुर गांव के माताबाढ़ी पर्वत शिखर पर माता का दायाँ पैर गिरा था। इसकी शक्ति है त्रिपुर सुंदरी और भैरव को त्रिपुरेश कहते हैं।

5.भैरव-शिव के पांचवें रुद्रावतार सबसे प्रसिद्ध माने गए हैं जिन्हें भैरव कहा जाता है। इस अवतार की शक्ति भैरवी गिरिजा मानी जाती हैं।

ज्जैन के शिप्रा नदी तट स्थित भैरव पर्वत पर मां भैरवी का शक्तिपीठ माना गया है, जहां उनके ओष्ठ गिरे थे। किंतु कुछ विद्वान गुजरात के गिरनार पर्वत के सन्निकट भैरव पर्वत को वास्तविक शक्तिपीठ मानते हैं। अत: दोनों स्थानों पर शक्तिपीठ की मान्यता है।

6. छिन्नमस्तक- छठा रुद्र अवतार छिन्नमस्तक नाम से प्रसिद्ध है। इस अवतार की शक्ति देवी छिन्नमस्ता मानी जाती हैं। छिनमस्तिका मंदिर प्रख्यात तांत्रिक पीठ है।

दस महाविधाओं में से एक मां छिन्नमस्तिका का विख्यात सिद्धपीठ झारखंड की राजधानी रांची से 75 किमी दूर रामगढ़ में है। मां का प्राचीन मंदिर नष्ट हो गया था अत: नया मंदिर बनाया गया, किंतु प्राचीन प्रतिमा यहां मौजूद है। दामोदर-भैरवी नदी के संगम पर स्थित इस पीठ को शक्तिपीठ माना जाता है। ज्ञातव्य है कि दामोदर को शिव व भैरवी को शक्ति माना जाता है।

7. दूयूमवान- शिव के दस प्रमुख रुद्र अवतारों में सातवां अवतार दूयूमवान नाम से विख्यात है। इस अवतार की शक्ति को देवी धूमावती माना जाता हैं।

धूमावती मंदिर मध्यप्रदेश के दतिया जिले में स्थित प्रसिद्ध शक्तिपीठ 'पीताम्बरा पीठ' के प्रांगण में स्थित है। पूरे भारत में यह मां धूमावती का एक मात्र मंदिर है जिसकी मान्यता भी अधिक है।

8. बगलामुख- शिव का आठवां रुद्र अवतार बगलामुख नाम से जाना जाता है। इस अवतार की शक्ति को देवी बगलामुखी माना जाता है।

दस महाविद्याओं में से एक बगलामुखी के तीन प्रसिद्ध शक्तिपीठ हैं- 1. हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा में स्थित बगलामुखी मंदिर, 2. मध्यप्रदेश के दतिया जिले में स्थित बगलामुखी मंदिर और 3. मध्यप्रदेश के शाजापुर में स्थित बगलामुखी मंदिर। इसमें हिमाचल के कांगड़ा को अधिक मान्यता है।

9. मातंग- शिव के दस रुद्रावतारों में नौवां अवतार मातंग है। इस अवतार की शक्ति को देवी मातंगी माना जाता है।

मातंगी देवी अर्थात राजमाता दस महाविद्याओं की एक देवी है। मोहकपुर की मुख्य अधिष्ठाता है। देवी का स्थान झाबुआ के मोढेरा में है।

10. कमल- शिव के दस प्रमुख अवतारों में दसवां अवतार कमल नाम से विख्यात है। इस अवतार की शक्ति को देवी कमला माना जाता है।

<u>बारह ज्योतिर्लिंग -</u>

1. सौराष्ट्र में 'सोमनाथ',
2. श्रीशैल में 'मल्लिकार्जुन',
3. उज्जयिनी में 'महाकालेश्वर',
4. ओंकार में 'अम्लेश्वर',
5. हिमालय में 'केदारनाथ',
6. डाकिनी में 'भीमेश्वर',
7. गोमती तट पर 'त्र्यम्बकेश्वर',
8. चिताभूमि में 'वैद्यनाथ',

9. दारुक वन में 'नागेश्वर',
10. सेतुबंध में 'रामेश्वर' और
11. शिवालय में 'घुश्मेश्वर'।
12. **शिवालय में 'घुश्मेश्वर'।**

CONTENTS